Toppersnotes

Unleash the topper in you

EMRS (TGT)

हिन्दी

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय

भाग – 1

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	गद्य साहित्य	
1.	हिन्दी गद्य साहित्य	1
2.	कहानी	23
3.	हिन्दी नाटक	41
4.	एकांकी	54
5.	आत्मकथा	61
6.	जीवनी	64
7.	हिन्दी के प्रमुख लेखक एवं उनके यात्रावृत्त	68
8.	संस्मरण एवं रेखाचित्र	70
9.	रिपोर्ताज	73
10.	निबंध	75

1
CHAPTER

गद्य साहित्य

हिन्दी गद्य साहित्य

गद्य शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ :-

- गद्य शब्द गद् धातु में य (यत्) प्रत्यय के जुड़ने से बना है।
- जिसका शाब्दिक अर्थ होता है: "मानव मन की मौलिक अभिव्यक्ति", अर्थात् (मन में आए वही बोलना)। जब कोई व्यक्ति अपने मन में उत्पन्न होने वाले विचारों को मूल रूप में ही अभिव्यक्त कर देता है, तो उसे गद्य काव्य कहा जाता है।

गद्य की परिभाषा :-

- आचार्य दण्डी ने गद्य की परिभाषा के लिए निम्नलिखित दो कथन प्रस्तुत किए हैं:-

(क) "अपादः पदसन्तानो गद्यः।"

छंद के नियमों से रहित पद-रचना ही गद्य काव्य कहलाती है।

(ख) "ओजः समास भूयस्त्वमेतद् गद्यस्य लक्षणम्।"

अर्थात् जिस रचना में ओज गुण एवं सामासिक पदों का अत्यधिक प्रयोग किया जाता है, वह गद्य रचना कहलाती है।

गद्य: [मन में आए वही बोलना]

गद्य काव्य के भेद

(I) **विषय-वस्तु या प्राचीन इतिहासकारों के आधार पर गद्य काव्य के प्रमुखतः दो भेद माने जाते हैं :-**

1. **कथा:** कवि की स्वयं की कल्पना से रचित गद्य को कथा श्रेणी में शामिल किया जाता है।
2. **आख्यायिका:** ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर रचित गद्य को आख्यायिका श्रेणी में शामिल किया जाता है।

(II) **समास के आधार पर गद्य काव्य के निम्नानुसार चार भेद माने जाते हैं :-**

1. **मुक्तक:** सामासिक पदों का पूर्ण अभाव होना।
2. **उत्कलिका प्राय:** सामासिक पदों का अत्यधिक प्रयोग होना।
3. **चूर्णक:** सामासिक पदों का अल्प मात्रा में प्रयोग होना।
4. **वृत्तगंधि:** गद्य काव्य को भी पद्य काव्य की तरह तुक मिलाकर लिखने का प्रयास करना।

हिन्दी गद्य काव्य के भेद

- हिन्दी साहित्य में गद्य काव्य के भेदों को विद्या के नाम से पुकारा जाता है।
- हिन्दी गद्य साहित्य में अब तक निम्नलिखित 17 **विद्याओं** का विकास हुआ है:

1. निबंध
2. आलोचना
3. कहानी
4. उपन्यास
5. नाटक
6. एकांकी

7. रेखाचित्र
8. संस्मरण
9. यात्रावृत्त
10. रिपोर्ताज
11. आत्मकथा
12. जीवनी
13. पत्र
14. फीचर
15. डायरी
16. साक्षात्कार
17. अभिनंदन ग्रंथ या स्मृति ग्रंथ

हिन्दी गद्य साहित्य का काल-विभाजन

- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा सम्पूर्ण हिन्दी गद्य साहित्य को निम्नानुसार **चार कालखण्डों** में विभाजित किया गया है।
- यथा:

1. **अभ्युत्थान काल [भारतेन्दु युग] -** 1900 वि. से 1950 वि. तक [1843 ई. से 1893 ई. तक] – **50 वर्ष**
2. **परिष्कार काल [द्विवेदी युग]-** 1950 वि. से 1975 वि. तक [1893 ई. से 1918 ई. तक] – **25 वर्ष**
3. **उत्कर्ष काल [छायावादी युग]** -1975 वि. से 1995 वि. तक [1918 ई. से 1938 ई. तक] – **20 वर्ष**
4. **वर्तमान काल [अद्यतन युग]**- 1995 वि. से अब तक [1938 ई. से अब तक]

अन्य विशेष तथ्य

1. "**गद्य कवीना निकषं वदन्ति।**" — गद्य कवियों की कसौटी है। **[आचार्य वामन]**

- प्रत्येक भाषा का साहित्य सर्वप्रथम **पद्य काव्य** के रूप में लिखा गया था, और उसके प्रसिद्ध होने के **कई वर्षों बाद** ही **गद्य काव्य** का उदय हुआ। इसके आधार पर यह माना जाता है कि **पद्य काव्य की अपेक्षा गद्य काव्य लिखना कठिन** माना जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए **8वीं शताब्दी** में **आचार्य वामन** ने यह कथन लिखा: "**गद्य कवीना निकषं वदन्ति।**"
- हिन्दी गद्य की **17 विद्याओं** में **निबंध विद्या** को सर्वप्रथम विकसित विद्या माना जाता है।
- इस प्रकार **वामन** ने "गद्य को कवियों की कसौटी" कहा है।
- उसी प्रकार **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने **निबंध** को "**गद्य की कसौटी**" कहा है।
- आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र** वर्तमान हिन्दी गद्य के प्रवर्तक माने गए हैं।
- **मुद्रणालयों (प्रिंटिंग प्रेस)** की स्थापना के बाद हिन्दी गद्य साहित्य में सर्वप्रथम **निबंध** विद्या का विकास हुआ माना जाता है।

1. उपन्यास

उप + **न्यास**

↓ ↓

समीप **धरोहर**

↓ ↓

सामने **स्थापना**

- **उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ :-** उपन्यास शब्द की व्युत्पत्ति के सम्बन्ध में **निम्नलिखित दो मत** माने जाते हैं। **यथा :**

- **प्रथम मत :-** इस मत के अनुसार उपन्यास शब्द **उप** + **न्यास** के योग से बना है।

↓ ↓

यहाँ**: अर्थ** **अर्थ**

↓ ↓

समीप **धरोहर**

अर्थात्: हमारे समीप रखी हुई धरोहर को ही उपन्यास कहा जाता है।

- **द्वितीय मत :-** इस मत के अनुसार भी उपन्यास शब्द **उप** + **न्यास** के योग से बना हुआ माना गया है।

↓ ↓

अर्थ अर्थ

यहाँ: ↓ ↓

सामने **स्थापना**

अर्थात्: हमारे सामने ही किसी विषय-वस्तु को स्थापित या प्रस्तुत करना ही उपन्यास कहलाता है।

उपन्यास की परिभाषाएँ :-

1. **मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार: "मानव चरित्र पर प्रकाश डालना एवं उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास है।"**
   मुंशी प्रेमचन्द ने उपन्यास को "**मानव चरित्र का आख्यान**" भी कहा है।
2. **बाबू श्यामसुंदर दास: "मानव के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।"**
3. **डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त: "उपन्यास गद्य का नव विकसित रूप है जिसमें कथावस्तु, चरित्र-चित्रण, संवाद इत्यादि तत्वों के माध्यम से यथार्थ एवं कल्पना मिश्रित कहानी को आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया जाता है।"**
4. **क्रोसे के अनुसार: "उपन्यास से हमारा अभिप्राय उस गद्यमय गल्प-कथा से है जिसमें वास्तविक जीवन का यथार्थ चित्रण किया जाता है।"**
5. **सारांश :- उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि** मानवीय मनोवेगों का ऐसा चित्रण जिसमें वास्तविकता के साथ-साथ कल्पना का मिश्रण करके उसे आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया जाता है, **वही उपन्यास कहलाता है।**

Unleash the topper in you

उपन्यास की प्रमुख विशेषताएँ

1. उपन्यास हिन्दी गद्य साहित्य की एक **नव-विकसित विद्या** है।
2. उपन्यास में **मानव जीवन का सर्वांग विवेचन** किया जाता है।
3. उपन्यास में एक **मुख्य कथा** के साथ-साथ कुछ **सहायक एवं प्रासंगिक कथाओं** को भी शामिल किया जाता है।
4. उपन्यास में **यथार्थ (वास्तविकता)** एवं **कल्पना का सुंदर मिश्रण** किया जाता है।

- **उपन्यास के प्रमुख तत्व – (छः)**
  - ✓ उपन्यास रचना में प्रमुखतः निम्नलिखित **छः तत्व** पाए जाते हैं (नोट: कहानी में भी यही तत्व होते हैं।)

1. कथावस्तु / विषयवस्तु / कथानक
2. पात्र एवं चरित्र
3. कथोपकथन या संवाद
4. भाषा-शैली
5. देशकाल व वातावरण
6. उद्देश्य

हिन्दी गद्य साहित्य का काल-विभाजन (उपन्यास के सन्दर्भ में)

- हिन्दी साहित्य में **मुंशी प्रेमचन्द** को **सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार** माना जाता है।
- इन्हीं को **केंद्र बिंदु** मानकर हिन्दी उपन्यास को तीन प्रमुख कालखंडों में बाँटा गया है:

1. **प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास** - 1918 ई. से पूर्व रचित उपन्यास
2. **प्रेमचन्द युगीन हिन्दी उपन्यास** - 1918 ई. से 1938 ई. तक
3. **प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास** - 1938 ई. के पश्चात रचित उपन्यास

हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम मौलिक उपन्यास (विवादित मत)

क्रम	मत/विद्वान	उपन्यास का नाम	वर्ष	लेखक
1.	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. बच्चन सिंह	**परीक्षा गुरु**	1882 ई.	लाला श्रीनिवास दास
2.	डॉ. गणपति चन्द्रगुप्त	**भाग्यवती**	1877 ई.	श्रद्धाराम फुल्लौरी
3.	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	**पूर्ण प्रकाश चन्द्रप्रभा** (अनूदित)	1880 ई.	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
4.	डॉ. श्रीकृष्णलाल	**चन्द्रकान्ता**	1891 ई.	देवकीनन्दन खत्री
5.	शिवनारायण श्रीवास्तव	**रानी केतकी की कहानी**	1803 ई.	सैयद दशा अल्ला खाँ
6.	बाबू गोपाल राय	**देवरानी-जेठानी की कहानी**	1870 ई.	पं. गौरीदत्त
7.	सर्वमान्य मत	**परीक्षा गुरु**	1882 ई.	लाला श्रीनिवास दास

उपन्यास से संबंधित अन्य विशेष तथ्य

1. **सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यास:-** आदर्श रमणी या हृदय हारिणी – 1890 ई. लेखक – **किशोरीलाल गोस्वामी**
2. **सर्वप्रथम राजनीतिक उपन्यास:-** प्रेमाश्रम – 1922 ई. लेखक – **मुंशी प्रेमचन्द**
3. **सर्वप्रथम जीवन चरितात्मक उपन्यास:-** झाँसी की रानी – 1946 ई. लेखक – **वृंदावनलाल वर्मा**
4. **सर्वप्रथम आख्यायिका शैली का उपन्यास:-** श्यामा स्वप्न – 1885 ई. लेखक – **ठाकुर जगमोहन**
5. **सर्वप्रथम स्मृति शैली का उपन्यास:-** देहाती दुनिया – 1926 ई. लेखक – **शिवपूजन सहाय**
6. **सर्वप्रथम आँचलिक उपन्यास:-** मैला आँचल – 1954 ई. लेखक – **फणीश्वरनाथ रेणु**
7. **सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार:- किशोरीलाल गोस्वामी**
8. **जासूसी उपन्यासों के जनक:- देवकीनन्दन खत्री**
9. **तिलस्मी–ऐयारी उपन्यासों के जनक:- देवकीनन्दन खत्री**
10. **"घासलेटी साहित्य" के लेखक:- पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'** इनके उपन्यास मानव मन को तुरन्त आकृष्ट कर लेते थे। **बनारसीदास चतुर्वेदी** ने इन्हें "घासलेटी साहित्य" कहा।

1. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास (1918 ई. से पूर्व)

1. **बालकृष्ण भट्ट** – रहस्य कथा – 1879 ई. (केवल डॉ. नगेन्द्र के अनुसार)
2. **नूतन ब्रह्मचारी** – 1886 ई.

3. **सौ अजान एक सुजान** – 1992 ई.

- ये दोनों उपन्यास **विद्यार्थियों और नवयुवकों को नैतिक शिक्षा** देने के उद्देश्य से लिखे गए थे।
- नूतन ब्रह्मचारी में **विनायक नामक नायक** द्वारा डाकुओं का **हृदय-परिवर्तन** किया जाता है।
- सौ अजान एक सुजान में **सत्संगति के महत्व** को बताया गया है।
- एक **बिगड़े हुए सेठ** को सुधारने की कथा।
- डॉ. नगेन्द्र के अनुसार:-उन्होंने रहस्य कथा (1879) नामक एक अन्य उपन्यास भी लिखा, परंतु वह **अब उपलब्ध नहीं** है।
- इनकी गद्य शैली से प्रभावित होकर **आचार्य शुक्ल** ने इन्हें "**हिन्दी का स्टील**" कहा।
- **हिन्दी का एडीसन – प्रताप नारायण मिश्र** को कहा गया।

2. ठाकुर जगमोहन (या जगन्मोहन)

- **श्यामा स्वप्न – 1885 ई.**
- इस उपन्यास में एक **क्षत्रिय कुमार श्यामसुन्दर** और एक **ब्राह्मण कुमारी श्यामा** की प्रेम कथा का वर्णन किया गया है।
- यह हिन्दी में **आख्यायिका शैली में रचित सर्वप्रथम उपन्यास** माना जाता है।
- ठाकुर जगमोहन स्वयं भी **विजयराघव** नामक रियासत के राजकुमार थे।

3. मेहता लज्जाराम शर्मा

क्रम	**उपन्यास**	**वर्ष**
1.	**धूर्त रसिक लाल**	1890 ई.
2.	**स्वतंत्ररमा और परतंत्र लक्ष्मी**	1899 ई.
3.	**आदर्श दम्पती**	1904 ई.
4.	**बिगड़े का सुधार या सती सुखदेव**	1907 ई.
5.	**आदर्श हिन्दू**	1914 ई.

विशेष तथ्य:- इनके उपन्यासों में **भारतीय हिन्दू संस्कृति की महत्ता** का प्रतिपादन किया गया है।

4. लाल श्रीनिवास दास

- इनके उपन्यास परीक्षा गुरु में **मदन मोहन** (नायक) नामक एक **सेठपुत्र** की कथा का वर्णन है।
- यह नायक अपनी युवावस्था में अपने दो मित्रों:- 1. **शंभदयाल** 2. **चुन्नीलाल** की **कुसंगति में पड़ जाता है,** किंतु अंत में **ब्रजकिशोर** नामक एक अन्य मित्र की सहायता से **सही मार्ग** पर लौट आता है।

5. राधाकृष्णदास

- **निस्सहाय हिन्दू – 1890 ई.-**
  - ✓ यह उपन्यास **गोवध** पर आधारित है।
  - ✓ इसमें **हिन्दुओं की निस्सहायता** एवं **मुसलमानों की धार्मिक कट्टरता** का चित्रण किया गया है।

6. बाबू देवकीनन्दन खत्री (1861–1913)

- **प्रमुख रचनाएँ:**

क्रम	उपन्यास	वर्ष
1.	**चन्द्रकान्ता**	1891 ई. (4 भागों में)
2.	**नरेन्द्र मोहिनी**	1893 ई.
3.	**वीरेन्द्र वीर**	1895 ई.
4.	**कटोरे भरा खून**	1895 ई.
5.	**चन्द्रकान्ता संतति**	1896–1905 ई.
6.	**कुसुम कुमारी**	1899 ई.
7.	**काजर की कोठरी**	1902 ई.
8.	**अनूठी बेगम**	1905 ई.
9.	**भूतनाथ**	1906 ई. (अपूर्ण – 31 भागों में)
10.	**गुप्त गोदना**	1906 ई.

- **विशेष तथ्य (वि.त.):**

1. **चन्द्रकान्ता** इनका **सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास** माना जाता है। इसमें **विजयगढ़ की राजकुमारी चन्द्रकान्ता** की कथा है। यह उपन्यास **चार भागों में** प्रकाशित हुआ।
2. **चन्द्रकान्ता संतति** इनका दूसरा सबसे प्रसिद्ध उपन्यास है। यह **1896–1905 ई.** के बीच प्रकाशित हुआ।
3. **भूतनाथ** एक **अपूर्ण उपन्यास** है। इसके कुल **21 भागों** में से केवल **पहले 6 भाग** देवकीनन्दन खत्री द्वारा लिखे गए। शेष **15 भाग** उनके पुत्र **दुर्गाप्रसाद खत्री** द्वारा पूर्ण किए गए।

- **चन्द्रकान्ता** और **चन्द्रकान्ता संतति** जैसे उपन्यासों को पढ़ने के लिए अनेक **गैर-हिन्दी भाषी लोगों** ने भी हिन्दी सीखी थी।
- ये **हिन्दी साहित्य में "तिलस्मी ऐयारी" शैली के जन्मदाता** माने जाते हैं।

7. किशोरीलाल गोस्वामी (1865 ई. – 1932 ई.)

- **प्रमुख रचनाएँ:**

क्रम	उपन्यास का नाम	प्रकाशन वर्ष	अन्य नाम
1.	**आदर्श रमणी या हृदय हारिणी**	1890 ई.	सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यास (पत्रिका में प्रकाशित), पुस्तक रूप: 1904 ई.
2.	**लवगलता**	1890 ई.	–
3.	**त्रिवेणी या सौभाग्य श्री**	1890 ई.	–
4.	**लीलावती या आदर्श सती**	1901 ई.	–
5.	**ताराबाई या क्षत्रिय कुलमलिनी**	1902 ई.	–
6.	**कनक कुसुम या मस्तानी**	1903 ई.	–
7.	**सुल्ताना रजिया बेगम या रंगमहल में हलाहल**	1904 ई.	–
8.	**मल्लिका देवी या बंग सरोजिनी**	1905 ई.	–
9.	**लखनऊ की कब्र या शाही महलसराय**	1917 ई.	–

➢ **विशेष तथ्य (वि.त.):**

✓ **किशोरीलाल गोस्वामी** ने हिन्दी साहित्य में लगभग **65 उपन्यास** लिखे हैं (आचार्य शुक्ल के अनुसार)।

✓ इनके **अधिकांश उपन्यासों के दो नाम** होते हैं (मुख्य शीर्षक + वैकल्पिक शीर्षक)।

✓ ये हिन्दी साहित्य में **ऐतिहासिक उपन्यासों के जन्मदाता** माने जाते हैं।

✓ हृदय हारिणी या आदर्श रमणी को हिन्दी साहित्य का **सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यास** माना जाता है।

✓ यह उपन्यास **"हिन्दुस्तान" पत्र** में **1809 ई.** में धारावाहिक रूप से प्रकाशित हुआ था (यह तिथि त्रुटिपूर्ण प्रतीत होती है, संभवतः 1890 ई. होना चाहिए)।

✓ पुस्तक रूप में इसका प्रकाशन **1904 ई.** में हुआ।

✓ इन्होंने "उपन्यास" नामक **पत्रिका का संपादन** भी किया।

8. गोपालराम गहमरी (1866 ई. – 1946 ई.)

➢ **प्रमुख जासूसी उपन्यास:**

1. **अद्भुत लाश**
2. **सरकटी लाश**
3. **बेकसूर की फाँसी**
4. **बेगुनाह का खून**
5. **जासूस की मौत**
6. **जासूस पर जासूसी**
7. **जासूस की ऐयारी**
8. **जासूस चक्कर में**
9. **इन्द्रजालिक जासूस**
10. **देवरानी जेठानी**
   (नोट: “देवरानी जेठानी की कहानी” लेखक पं. गौरीदत्त थे)

➢ **विशेष तथ्य (वि.त.):**

✓ **गोपालराम गहमरी** को हिन्दी साहित्य में **जासूसी उपन्यासों के जनक** के रूप में जाना जाता है।

✓ इन्होंने हिन्दी में लोकप्रिय, रहस्यमयी और अपराध प्रधान कथाओं का लेखन कर जासूसी साहित्य की एक **नयी परंपरा** की शुरुआत की।

9. अयोध्या सिंह उपाध्याय ‘हरिऔध’

➢ **प्रमुख उपन्यास:**

1. **ठेठ हिन्दी का ठाठ** — अनमेल विवाह पर आधारित
2. **बेनिस का बाँका**
3. **अधखिले फूल** — नारी सतीत्व का गौरव गान

➢ **विशेष तथ्य (वि.त.):**

✓ इनके उपन्यासों में **सामाजिक समस्याओं** का सजीव चित्रण किया गया है।

✓ "ठेठ हिन्दी का ठाठ" उपन्यास में **अनमेल विवाह** से उत्पन्न होने वाली **परेशानियों** का वर्णन है।

✓ "अधखिले फूल" उपन्यास में **नारी के सतीत्व का महिमामंडन** किया गया है।

✓ उनके साहित्य में **नारी की महत्ता** को विशेष रूप से रेखांकित किया गया है।

10. पं. अम्बिका दत्त व्यास

➢ **आश्चर्य वृत्तांत** – 1893 ई. यह उपन्यास **प्रारंभिक हिन्दी उपन्यासों** में गिना जाता है।

11. राधिका रमण प्रसाद सिंह

- **प्रमुख उपन्यास:**
  1. **प्रेम लहरी या नवजीवन** – 1916 ई.
  2. **राम-रहीम** – 1937 ई. यह उपन्यास **प्रेमचन्द युग** में प्रकाशित हुआ था। इसमें **हिन्दू-मुस्लिम एकता** और **साम्प्रदायिक सद्भाव** का संदेश निहित है।

2. <u>प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी उपन्यास [1918 ई. - 1938 ई. तक]</u>

1. मुंशी प्रेमचन्द

जन्म - 1880 ई.

मृत्यु - 1936 ई.

1. **सेवा सदन - 1918 ई.**

- यह उपन्यास पहले उर्दू भाषा बाजार-ए-हुस्न के नाम से लिखा गया था।
- इस उपन्यास में प्रमुखतः वैवाहिक समस्याओं का चित्रण किया गया है।
- स्वयं प्रेमचन्द जी ने इस उपन्यास को "हिन्दी का बेहतरीन नॉवेल" कहकर पुकारा था।

2. **प्रेमाश्रम / प्रेमाश्रय - 1922 ई.**

- यह उपन्यास भी पहले उर्दू भाषा में गोशा-ए-आफियत नाम से लिखा गया था।
- इस उपन्यास में कृषक जीवन की समस्याओं का चित्रण किया गया है।
- यह हिन्दी साहित्य का सर्वप्रथम राजनीतिक उपन्यास भी माना जाता है।

3. **रंगभूमि - 1925 ई.**

- यह उपन्यास भी पहले उर्दू भाषा में चौगान-ए-हस्ती नाम से लिखा गया है।
- इस उपन्यास में एक अंधे दलित सूरदास को नायक बनाया गया है।
- प्रेमचन्द ने सर्वप्रथम इसी उपन्यास में एक दलित व्यक्ति को नायक बनाया था।
- **सेवा, प्रेमा, रंग, कानि, गबनकर, गो**
  - ✓ रंगभूमि उपन्यास में शासकों/अधिकारियों द्वारा दलितों पर किए जाने वाले अत्याचारों का वर्णन किया गया है।

4. **कायाकल्प - 1926 ई.**

- यह प्रेमचन्द द्वारा मूलतः हिन्दी भाषा में रचित सर्वप्रथम उपन्यास माना जाता है।
- इस उपन्यास में इन्होंने ढोंगी बाबाओं के चरित्र को उजागर किया है व धार्मिक कुकृत्यों का चित्रण किया है।

5. **निर्मला - 1927 ई.**

- इस उपन्यास में इन्होंने अनमेल विवाह एवं दहेज प्रथा से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का चित्रण किया है।

6. **गबन - 1931 ई.**

- इस उपन्यास में इन्होंने नायक - रमानाथ एवं नायिका - जालपा को माध्यम बनाकर आधुनिक मध्यमवर्गीय परिवारों की कमजोरियों, आर्थिक विषमताओं एवं आभूषण-लालसा जैसी समस्याओं का चित्रण किया है।

7. **कर्मभूमि - 1933 ई.**

- इस उपन्यास में इन्होंने भारतीय हिन्दू समाज में हरिजनों की स्थिति एवं उनकी समस्याओं का चित्रण किया है।

8. **गोदान - 1935 ई.**

- यह प्रेमचन्द जी का सबसे अन्तिम पूर्ण प्रकाशित एवं सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है।
- इस उपन्यास में इन्होंने किसानों एवं मज़दूरों की समस्याओं का चित्रण किया है।
- मालती-मेहता, धनिया-होरी, गोबर, अमरकान्त, पठानिन आदि इसके प्रमुख पात्र माने जाते हैं।
- डॉ. नगेन्द्र ने इस उपन्यास को ग्रामीण जीवन एवं कृषि संस्कृति का महाकाव्य कहकर पुकारा है।

9. **मंगलसूत्र - 1948 ई.**

- यह प्रेमचन्द जी द्वारा रचित अधूरा / अपूर्ण उपन्यास माना जाता है। आगे चलकर बाद में उनके पुत्र अमृतराय द्वारा इस उपन्यास को पूर्ण करके 1948 ई. में प्रकाशित करवाया गया था।
- **प्रेमचन्द के उपन्यासों का सारांश:**
  - ✓ 1907 - **प्रेमा** → दो सखियों का विवाह
  - ✓ 1918 - **सेवासदन** → बाजार-ए-हुस्न (उर्दू भाषा)
  - ✓ 1921 - **वरदान** → जल्वा-ए-निसार (उर्दू भाषा)
  - ✓ 1922 - **प्रेमाश्रम** → गोशा-ए-आफियत (उर्दू भाषा)
  - ✓ 1925 - **रंगभूमि** → चौगान-ए-हस्ती (उर्दू भाषा)

<u>प्रेमचन्द द्वारा रचित अन्य उपन्यास</u>

1. **प्रेमा / दो सखियों का विवाह** :- यह उपन्यास हंसखुर्मा या हम सवाब नाम से सर्वप्रथम 1907 में उर्दू भाषा में प्रकाशित हुआ था। बाद में 1929 ई. में इस उपन्यास को प्रतिज्ञा नाम से हिन्दी में रूपान्तरित किया गया था।
2. **वरदान - 1921** :- यह उपन्यास जल्वा-ए-हिसार नाम से उर्दू भाषा में लिखा गया था।
3. **किसना**
4. **देवस्थान रहस्य** :- यह उपन्यास असरारे मआबिद नाम से उर्दू में लिखा गया था।

- **अन्य विशेष तथ्य**

1. प्रेमचन्द का मूल या वास्तविक नाम **धनपतराय** था।
2. प्रेमचन्द अपने आरंभिक जीवन में **नवाबराय** के नाम से उर्दू भाषा में लेखन कार्य किया करते थे।
3. प्रेमचन्द द्वारा रचित सोज़े वतन नामक कहानी संग्रह में अंग्रेजी सरकार की खिलाफत करने के कारण 1907 ई. में इस संग्रह को **जब्त** कर लिया गया था एवं उनके लेखन कार्य पर भी **प्रतिबंध** लगा दिया गया था। साथ ही हंस पत्रिका पर भी **रोक** लगा दी गई थी।
4. इस प्रतिबंध के बाद प्रेमचन्द ने **मुंशी दयानारायण निगम** के सुझाव पर अपना नाम बदलकर **प्रेमचन्द** रख लिया था और इसी नाम से लेखन कार्य करने लगे थे। **प्रेमचन्द नाम 1907 के बाद आया है।**

- **सम्मान एवं विशेषण**
  - ✓ हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द को **"उपन्यास सम्राट"** के नाम से जाना जाता है।
    - यह उपाधि उन्हें प्रसिद्ध बंगाली उपन्यासकार **शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय** द्वारा प्रदान की गई थी।
  - ✓ उनके पुत्र **अमृत राय** ने कमल का सिपाही नामक जीवनी लिखकर प्रेमचन्द को **कमल का सिपाही** कहा है।
  - ✓ **मदन गोपाल** नामक एक अन्य विद्वान ने कमल का मज़दूर नामक जीवनी लिखकर उन्हें **कमल का मज़दूर** कहा है।
  - ✓ **डॉ. रामविलास शर्मा** ने प्रेमचन्द को **"कबीर के बाद दूसरा बड़ा व्यंग्यकार"** कहकर संबोधित किया है।
  - ✓ **नागार्जुन** ने प्रेमचन्द को **हिन्दी गद्य साहित्य का युगप्रवर्तक** कहा है।
- **संपादन कार्य**
  - ✓ प्रेमचन्द द्वारा हंस, माधुरी, जागरण, मर्यादा नामक पत्र-पत्रिकाओं का **संपादन कार्य** भी किया गया था।
- **प्रारंभिक जीवन और दृष्टिकोण**
  - ✓ प्रेमचन्द का बचपन / आरंभिक जीवन **खेत-खलिहानों में** बीता था, जिसके कारण उन्होंने किसानों व मजदूरों की समस्याओं का वास्तविक चित्रण किया।
  - ✓ **आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी** ने प्रेमचन्द की प्रशंसा करते हुए लिखा है: "प्रेमचन्द शताब्दियों से पददलित, उपेक्षित एवं अपमानित कृषकों की आवाज़ थे।"
  - ✓ मुंशी प्रेमचन्द मूलतः **आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी उपन्यासकार** माने जाते हैं।
  - ✓ **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने उन्हें **हिन्दी गद्य साहित्य का युगप्रवर्तक** कहा है।

2. जयशंकर प्रसाद

1. **कंकाल - 1929 ई.-**भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के "प्रेमयोगिनी" नाटक पर आधारित उपन्यास।
2. **तितली - 1934 ई.-** आदर्शपरक श्रेणी का उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास में सामंतवाद एवं जमींदारी प्रथा से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का चित्रण किया गया है।
3. **इरावती-** अधूरा उपन्यास।

- इन उपन्यासों में सामाजिक जीवन की समस्याओं का अधिक वर्णन किया गया है।
- कंकाल को "प्रेमयोगिनी" नाटक के कथानक पर आधारित उपन्यास माना जाता है।
- तितली को आदर्शपरक श्रेणी में रखा गया है।

3. विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक' [1819 ई. - 1946 ई.]

- **माँ** – 1929 ई.
- **भिखारिणी** – 1929 ई.
- **संघर्ष** – 1945 ई.
- इन उपन्यासों में नारी-हृदय की विशालता एवं नारी के आदर्शों का प्रमुखता से चित्रण किया गया है।
- नारी चरित्र को इनकी रचनाओं में विशेष रूप से उभारा गया है।
- ये हिन्दी साहित्य में रसिक एवं मनमौजी साहित्यकार के नाम से भी जाने जाते हैं।
- इन्होंने **महावीर प्रसाद द्विवेदी** को अपना आदर्श एवं प्रेरणास्रोत माना।

4. आचार्य चतुरसेन शास्त्री

प्रमुख उपन्यास:

- **हृदय की परख**
- **हृदय की व्यथा** (संभवत: "व्यास" नहीं, "व्यथा" होगा)
- **अमर अभिलाषा**
- **आत्मदाह**
- **मंदिर की नर्तकी**
- **रक्त की व्यथा**
- **वैशाली की नगरवधू – 1948 ई.** व्यक्ति स्वातंत्र्य की समस्याओं का चित्रण किया गया है।
- **सोमनाथ**
- **आलमगीर**
- **वयं रक्षामः**
- **सोना और खून**
- **सह्याद्रि की चट्टानें**
- हिन्दी साहित्य में इन्होंने लगभग उदात्त जीवन मूल्यों पर आधारित उपन्यास लिखे हैं।
- इनके उपन्यासों में दुराचार, अत्याचार, व्यभिचार, अनैतिकता जैसी सामाजिक बुराइयों का चित्रण किया गया है।
- वैशाली की नगरवधू इनका **सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास** माना जाता है।
- इस उपन्यास में उन्होंने **व्यक्ति-स्वातंत्र्य की समस्या** का गहन चित्रण किया है।

5. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

- **घंटा**
- **चंद हसीनों के खतूत** – हिन्दी साहित्य में पत्रात्मक शैली में रचित **सर्वप्रथम उपन्यास** माना जाता है।
- **दिल्ली का दलाल**
- **बुधुआ की बेटी**
- **शराबी**
- **सरकार तुम्हारी आँखों में**
- **जी-जी-जी**
- **कला का पुरस्कार**
- **मनुष्यानंद**
- **कढ़ी में कोयला**
- **फागुन के दिन-चार**
- इनके उपन्यास **मानव-मन पर तुरन्त प्रभाव** छोड़ते हैं, जिसके कारण **बनारसीदास चतुर्वेदी** ने इनके साहित्य को **"घासलेटी साहित्य"** कहकर पुकारा है।
- इन्होंने **अत्यधिक उग्र एवं ओजस्वी भाषा-शैली** का प्रयोग किया है। इसीलिए आलोचकों ने इन्हें **"उल्कापात", "तूफान", "बवंडर", "धूमकेतु", "उग्र"** आदि उपनामों से भी पुकारा है।
- इन्होंने मतवाला, वीणा, स्वराज, स्वदेश, विक्रम, संग्राम आदि पत्र-पत्रिकाओं का **संपादन कार्य** भी किया।
- अपने आरंभिक लेखन जीवन में इन्होंने **"अष्टावक्र"** उपनाम से भी लेखन किया।
- इनके उपन्यासों में **दलित व पतित वर्ग की जीवन समस्याओं** का चित्रण किया गया है।
- इन्होंने **अयोध्या की रामलीला मंडली** में अनेक बार **सीता का अभिनय** भी किया था।

वृंदावनलाल वर्मा [1884 – 1969]

प्रमुख उपन्यास:

- **संगम**
- **प्रत्यागत**
- **गढ़कुंडार – 1927** हिन्दी का सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यास
- **झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई**
- **मुसाहिब-जु**
- **मृगनयनी – 1950**
- **सत्रह सौ उन्नीस : माधवजी सिंधिया**
- **टूटे काँटे**
- **अचल मेरा कोई**
- **अमरबेल**
- **राखी की लाज**
- **अहल्याबाई**
- **मृगनयनी** – इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है।
- ग्वालियर नरेश मानसिंह, मृगनयनी, अटल, लाखी आदि इसके प्रमुख पात्र हैं।
- इस उपन्यास में राजा-प्रजा, राजनीति-संस्कृति, इतिहास-कल्पना, युद्ध-प्रेम, सौंदर्य-संयम, नगर-ग्राम आदि का **सुन्दर समन्वय** मिलता है।
- **डॉ. बच्चन सिंह** के अनुसार यह उपन्यासकार हिन्दी के **सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार** माने जाते हैं।
- उनके द्वारा रचित गढ़कुंडार (1927 ई.) को डॉ. बच्चन सिंह ने हिन्दी का **सर्वप्रथम ऐतिहासिक उपन्यास** माना है।
- हिन्दी साहित्य में इन्हें **"बुंदेलखंड का चंदबरदाई"** भी कहा जाता है।

शिवपूजन सहाय [1893 – 1963]

- **देहाती दुनिया – 1926**
- यह हिन्दी साहित्य के **स्मृति-शैली** में रचित **सर्वप्रथम उपन्यास** माना जाता है।
- इसमें ग्रामीण जीवन एवं संस्कृति का सजीव चित्रण किया गया है।
- **कुछ समीक्षकों** के अनुसार, इसे **हिन्दी का सर्वप्रथम आंचलिक उपन्यास** भी माना जाता है।

राहुल सांकृत्यायन (1893 ई. – 1963 ई.)

प्रमुख उपन्यास एवं रचनाएँ:

- **शैतान की आँख**
- **विस्मृति के गर्भ में**
- **सोने की दाल**
- **जीने के लिए**
- **सिंह सेनापति**
- **जय यौद्धेय**
- **मधुर स्वप्न**
- **विस्मृत यात्री**
- **दिवोदास**
- **जादू का मुल्क**
- **राजस्थान रनिवास**

- **महत्वपूर्ण तथ्य:**
    - ✓ इनका **मूल / वास्तविक नाम - केदार पाण्डेय** था।
    - ✓ 1930 ई. में श्रीलंका यात्रा तथा 1936 ई. में तिब्बत यात्रा के दौरान इन्होंने **बौद्ध धर्म** ग्रहण किया, जिसके बाद इनका नाम **राहुल सांकृत्यायन** पड़ा।
    - ✓ हिन्दी साहित्य में इन्होंने लगभग **150 रचनाएँ** लिखी हैं, जिनमें यात्रा-वृत्तांत, उपन्यास, निबंध, आलोचना, शोध आदि शामिल हैं।
    - ✓ 1936 ई. में ही **नागार्जुन** (मूल नाम - वैद्यनाथ मिश्र) ने भी बौद्ध धर्म ग्रहण किया था।

3. प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यास [1938 ई. से अब तक]

- **इस युग में लिखे गए उपन्यासों को विषय-वस्तु के आधार पर 5 श्रेणियों में विभाजित किया गया है:**

i. **मनोविश्लेषणवादी उपन्यास**

ii. **साम्यवादी या प्रगतिवादी उपन्यास**

iii. **आंचलिक उपन्यास** (शुद्ध रूप "ओंचलिक" नहीं, "आंचलिक" होता है)

iv. **ऐतिहासिक उपन्यास**

v. **प्रयोगवादी या आधुनिकता-बोध वादी उपन्यास**

i. मनोविश्लेषणवादी उपन्यास

- इस युग के जिन उपन्यासों में सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं की उपेक्षा करके केवल **यौवन व वासना** को ही मुख्य विषय बनाया गया है, वे **मनोविश्लेषणवादी उपन्यास** कहलाते हैं।
- इस श्रेणी में प्रमुखतः निम्नलिखित उपन्यासकार शामिल किए जाते हैं:

1. जैनेन्द्र कुमार (1905 ई. – 1988 ई.)

प्रमुख उपन्यास:

- **परख** – 1929
- **सुनीता** – 1935
- **त्यागपत्र** – 1937
- **कल्याणी** – 1939
- **सुखदा** – 1952
- **विवर्त** – 1953
- **व्यतीत** – 1953
- **मुक्तिबोध** – 1965 (इसके लिए 1966 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला)
- **तपोभूमि** – 1974
- **दशार्क** – 1985

- **विशेषताएँ:**
    - ✓ इनके लगभग सभी उपन्यास **नायिका-प्रधान** माने जाते हैं।
    - ✓ इन उपन्यासों में **यौन समस्याओं** एवं **स्वच्छंद प्रणय अनुभूति** का प्रमुखता से वर्णन किया गया है।
    - ✓ इनकी रचनाएँ **सिग्मंड फ्रायड** के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित मानी जाती हैं।
    - ✓ **"मुक्तिबोध"** उपन्यास के लिए इन्हें **1966 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार** प्रदान किया गया।

2. इलाचन्द्र जोशी (1902 ई. – 1982 ई.)

प्रमुख उपन्यास:

- **घृणामयी**
- **सन्यासी** (इनका सर्वश्रेष्ठ एवं मनोविश्लेषणवादी प्रवृत्ति का प्रथम उपन्यास)
- **प्रेत और छाया**
- **लज्जा**
- **पर्दे की रानी**
- **निर्वासिता**
- **मुक्तिपथ**
- **सुबह के भूले**
- **जिप्सी**
- **जहाज का पंछी**
- **मुख्य विषयवस्तु:**
  - ✓ इनके उपन्यासों में **कांभ (काम), अहम (अहंकार), दंभ, आत्महीनता** आदि विषयों का विश्लेषण किया गया है।
  - ✓ "सन्यासी" उपन्यास में इनकी मनोविश्लेषणात्मक लेखन प्रवृत्ति सर्वप्रथम देखने को मिलती है।

3. अज्ञेय

- शेखर: एक जीवनी (दो भागों में)
  - ✓ प्रथम भाग - 1941
  - ✓ द्वितीय भाग - 1944
- नदी के द्वीप - 1951
- अपने-अपने अजनबी - 1961
- **विशेष तथ्य**
  - ✓ शेखर: एक जीवनी इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है।
  - ✓ यह हिंदी साहित्य में "फ्लैशबैक (पूर्वदीप्ति) शैली" (पूर्व की बात याद करके है) में रचित प्रथम उपन्यास माना जाता है।
  - ✓ इस उपन्यास की विषय-वस्तु के आधार पर इस उपन्यास को "अतिशय आत्मकेंद्रित उपन्यास" और "प्रकाशमान पुच्छल तारा" के नाम से पुकारा जाता है।
  - ✓ उनके उपन्यासों में असामाजिक एवं अस्वाभाविक यौन समस्याओं का ही अधिक चित्रण किया गया है।

4. धर्मवीर भारती

- गुनाहों का देवता - 1949
- सूरज का सातवाँ घोड़ा - 1952
- **विशेष तथ्य**
  - ✓ सूरज का सातवाँ घोड़ा - इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है।
  - ✓ यह उपन्यास पंचतंत्र एवं अलिफ लैला की कहानियों पर आधारित उपन्यास माना जाता है।
  - ✓ इस उपन्यास की विषय-वस्तु को आधार बनाकर श्याम बेनेगल द्वारा सूरज का सातवाँ घोड़ा नामक टेली फिल्म का निर्माण भी किया गया था।
  - ✓ यह फिल्म 1992 में नेशनल फिल्म अवॉर्ड भी प्राप्त कर चुकी है।
  - ✓ गुनाहों का देवता - किशोर अवस्था में उत्पन्न होने वाली यौन भावनाओं का चित्रण किया गया है।

5. नरेश मेहता

- डूबते मस्तूल
- नदी यशस्वी है
- धूमकेतु: एक श्रुति
- उत्तरकथा
- यह पथ बंधु था
- **विशेष तथ्य**
  - ✓ अज्ञेय की तरह इनके उपन्यासों में भी असामाजिक एवं अस्वाभाविक यौन समस्याओं का अधिक चित्रण किया गया है।

II. साम्यवादी या प्रगतिवादी उपन्यास

- प्रेमचंदोत्तर युग (1938 के बाद) के जिन उपन्यासों में दलित, किसान एवं मजदूर वर्ग की समस्याओं को प्राथमिकता देते हुए राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं का चित्रण किया गया है, वे ही **साम्यवादी या प्रगतिवादी उपन्यास** कहलाते हैं।
- इस श्रेणी के प्रमुख उपन्यासकार निम्नानुसार शामिल किए गए हैं:

1. यशपाल (1903–1976)

- दादा कामरेड - 1941 ई.
- देशद्रोही - 1943 ई.
- दिव्या - 1945 ई.
- पार्टी कामरेड - 1946 ई.
- झूठा सच (दो भागों में)
  - ✓ प्रथम भाग - 1958 ई.
  - ✓ द्वितीय भाग - 1960 ई.
- बारह घंटे - 1964 ई.
- मेरी तेरी उसकी बात - 1974 ई. (1942 के बाद भारत छोड़ो आंदोलन पर आधारित)
  (1976 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त)
- **विशेष तथ्य**
  - ✓ ये हिंदी साहित्य में सर्वश्रेष्ठ **साम्यवादी** तथा **प्रगतिवादी** उपन्यासकार माने जाते हैं।
  - ✓ झूठा सच इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है।
  - ✓ भारत-पाक विभाजन की समस्या पर आधारित यह उपन्यास दो भागों में प्रकाशित हुआ था:
    (क) प्रथम भाग — 1958 में वतन और देश नाम से
    (ख) द्वितीय भाग — 1960 में देश का भविष्य नाम से
  - ✓ मेरी तेरी उसकी बात इनका दूसरा प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है।
  - ✓ इस उपन्यास में 1942 ई. के भारत छोड़ो आंदोलन की विषयवस्तु का चित्रण किया गया है।
  - ✓ इस उपन्यास के लिए इन्हें **1976 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार** भी प्राप्त हुआ था।

2. रांगेय राघव

- कब तक पुकारूँ
- अंधेरे के जुगनू
- मुर्दों का टीला - मोहनजोदड़ो के गणतंत्र का वर्णन
- चीवर
- सीधा साधा रास्ता
- राह न रुकी
- प्रतिदान
- विषाद मठ
- बंदूक और बीन
- डॉक्टर
- जब आवेगी काली घटा
- महायात्रा गाथा

- **विशेष तथ्य**
  - ✓ इनके उपन्यासों में शोषित वर्ग की समस्याओं का वास्तविक चित्रण किया गया है।
  - ✓ "कब तक पुकारूँ" उपन्यास में उन्होंने तत्कालीन समाज की जातिगत विषमता, आर्थिक शोषण, और सामाजिक असमानता को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास का नायक सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करता है, और यह रचना शोषित वर्ग की आवाज़ बनकर उभरती है।

3. भगवतीचरण वर्मा

- पतन
- टेडे-मेडे रास्ते
- अपने खिलौने
- सीधी सच्ची बातें
- सामर्थ्य और सीमा
- केरवा
- युवराज चुण्डा
- चाणक्य
- चित्रलेखा
- आखिरी दाँव
- भूले विसरे चित्र — 1959-1961 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त
- वह फिर नहीं आई
- थके पाँव
- रेखा
- प्रश्न और मरीचिका
- **विशेष तथ्य**
  - ✓ भूले बिसरे चित्र इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास में इन्होंने 1885 से लेकर 1930 ई. तक के भारतीय समाज की परिस्थितियों एवं आर्थिक परिवर्तन का वर्णन किया है और भारतीय राजनीतिक उथल-पुथल का चित्रण है।
  - ✓ इस उपन्यास के लिए इन्हें **1961** में साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला था।
  - ✓ टेडे-मेडे रास्ते भगवतीचरण वर्मा का दूसरा प्रसिद्ध उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास में एक ऐसे परिवार की कथा का चित्रण किया गया है, जिसमें परिवार का मुखिया (पिता) सामंतवादी विचारधारा का है, और उनके तीन पुत्रों में से एक गांधीवादी, दूसरा आतंकवादी, और तीसरा साम्यवादी विचारधारा रखने वाला है।

4. अमृतलाल नागर

- महाकाल या भूख
- सेठ बांकेमल
- बूंद और समुद्र - 1956
- शतरंज के मोहरे
- सुहाग के नूपुर
- ये कोठेवालियाँ
- अमृत और विष - 1966-1967 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त, 1970 में सोवियत भूमि पुरस्कार प्राप्त
- सात घूंघट वाला मुखड़ा
- एकदा नैमिषारण्ये
- नाच्यो बहुत गोपाल - हरिजनों का संघर्षमय जीवन
- मानस का हंस - तुलसीदास के जीवन का वर्णन
- खंजन नयन - सूरदास के जीवन का वर्णन
- बिखरे तिनके
- करवट
- अग्निगर्भा
- पीढ़ियाँ

➢ **विशेष तथ्य**

✓ बूंद और समुद्र इनका सर्वाधिक प्रसिद्ध उपन्प्रास माना जाता है। इस उपन्यास में बूँद को व्यक्ति का और समुद्र को समाज का प्रतीक माना जाता है।

✓ अमृत और विष इनका दूसरा प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास के लिए इन्हें **1967 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार** और **1970 ई. में सोवियत भूमि पुरस्कार** प्राप्त हुआ।

✓ नाच्यो बहुत गोपाल उपन्यास में इन्होंने भारतीय हिंदू समाज से सर्वथा उपेक्षित हरिजन जाति के लोगों के संघर्षमय जीवन का चित्रण किया है।

✓ मानस का हंस उपन्यास में गोस्वामी तुलसीदास जी के जीवन चरित्र का वर्णन किया गया है।

✓ खंजन नयन उपन्यास में सूरदास जी के जीवन चरित्र का वर्णन किया गया है।

✓ इन्होंने **1940-1947** तक भारतीय इंडस्ट्रीज में पटकथा एवं संवाद लेखन का कार्य भी किया था।

5. उपेन्द्रनाथ अश्क (1910–1996)

➢ सितारों का खेल
➢ गिरती दीवारें
➢ गर्म-राख
➢ बड़ी-बड़ी आँखें
➢ शहर में घूमता आइना
➢ बाँधों न नाव इस ठाँव
➢ एक नन्ही किंदील
➢ पत्थर-अल-पत्थर

➢ **विशेष तथ्य**

✓ इनके उपन्यासों में भी दलित वर्ग की समस्याओं का वास्तविक चित्रण किया गया है।

✓ प्रेमचंद की तरह इन्होंने भी आरंभ में उर्दू भाषा में लेखन कार्य किया था।

✓ इनके द्वारा भूचाल नामक एक पत्रिका का संपादन भी किया गया था।

ToppersNotes Unleash the topper in you

III. <u>आंचलिक उपन्यास</u>

➢ प्रेमचंदोत्तर युग के जिन उपन्यासों में ग्रामीण जीवन एवं ग्रामीण लोक संस्कृति का चित्रण किया गया है, वे **आंचलिक उपन्यास** कहलाते हैं।

➢ इस श्रेणी में प्रमुखतः निम्नलिखित उपन्यासकार शामिल किए गए हैं:

1. फणीश्वरनाथ रेणु (1921–1977)

➢ मैला आँचल - 1954 (किसान-जमीदार संघर्ष एवं उनसे संबंधित आंदोलनों का विस्तार से वर्णन है)
➢ परती परिकथा - 1957
➢ दीर्घतमा - 1964
➢ जुलूस - 1965
➢ कितने चौराहे - 1966
➢ कलंक मुक्ति – 1976
➢ पल्टू बाबू रोड

➢ **विशेष तथ्य**

✓ इनके उपन्यासों में ग्रामीण अंचल की रीति-नीति एवं आचार-विचार का विस्तार से वर्णन किया गया है।

✓ मैला आँचल उपन्यास हिंदी साहित्य का सर्वप्रथम आंचलिक उपन्यास माना जाता है।

✓ डॉ. नगेन्द्र के अनुसार इन्हें ही एकमात्र सर्वश्रेष्ठ आंचलिक उपन्यासकार माना गया है।

2. नागार्जुन

- बलचनामा
- नयी पौध
- बाबा बटेसरनाथ
- वरुण के बेटे
- दुखमोचन
- कुम्भीपाक
- हीरक जयंती
- उग्रतारा
- रतिनाथ की चाची
- चेहरे नये पुकारे
- इमरतिया
- हिमालय की बेटियाँ
- जमनिया का बाबा
- **विशेष तथ्य**
  - ✓ इनके उपन्यासों में मिथिला एवं उनके आसपास के क्षेत्रों की ग्रामीण लोक संस्कृति का वास्तविक वर्णन किया गया है।

3. श्रीलाल शुक्ल (1925–2011)

- सूनी घाटी का सूरज - 1957
- अज्ञातवास - 1962
- राग दरबारी - रिपोर्ताज शैली (1968, 1969 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त)
- आदमी का जहर - 1972
- सीमाएँ टूटती हैं - 1973
- मकान - 1976
- पहला पड़ाव - 1987
- विश्रामपुर का संत - 1998
- राग-विराग - 2001
- **विशेष तथ्य**
  - ✓ राग दरबारी इनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास माना जाता है।
  - ✓ इस उपन्यास में इन्होंने ग्राम पंचायतों की दलबंदी, गुटबंदी, चुनावी हथकंडे, सरकारी अधिकारियों/कर्मचारियों के भ्रष्टाचार आदि का वास्तविक वर्णन किया है।
  - ✓ यह रिपोर्ताज शैली में रचित उपन्यास माना जाता है।
  - ✓ इस उपन्यास के लिए इन्हें **1969 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार** भी मिला था।
  - ✓ हिंदी साहित्य में सम्पूर्ण योगदान के लिए इन्हें **2009 ई. में** अमरकान्त के साथ संयुक्त रूप से **भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार** भी प्रदान किया गया था।

IV. <u>ऐतिहासिक उपन्यास</u>

- प्रेमचन्दोत्तर मुग के जिन उपन्यासों में इतिहास में घटित घटनाओं का वर्णन किया गया है, वे **ऐतिहासिक उपन्यास** कहलाते हैं।
- इस श्रेणी में प्रमुखतः निम्नलिखित उपन्यासकार शामिल किए जाते हैं:

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी

- बाणभट्ट की आत्मकथा - 1946
- चारुचंद्र लेखा - 1962
- पुनर्नवा - 1973
- अनामदास का पोथा या अथ रैक्व आख्यान - 1976

ToppersNotes Unleash the topper in you